

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

ग्रंथ संग्रह :-

ग्रंथ क्रमां.

ग्रंथ नाम



प १८१ (१८१)

चें बाड.

विषय

मराठी काव्य.

क्र. २२
मराठी
द. १४
द. १७

५१६५/१८१ काव्य १

पदांचे वाउ

शके १६२३ मध्ये विहि निराक्या ५३/५४
कवींच्या कवितांचे मराठी कवींच्या नांवाची यादी ओत
नामदेव, विष्णुदासनामा, शानेश्वर, तुकाराम, रामदास
कवीर इ.



ਸ੍ਰੀ. ਕੇਂਦਰੀ

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ਗੋਰੇ ਦੀ ਭਾਈ ਮਾਨ ਮਾਨ

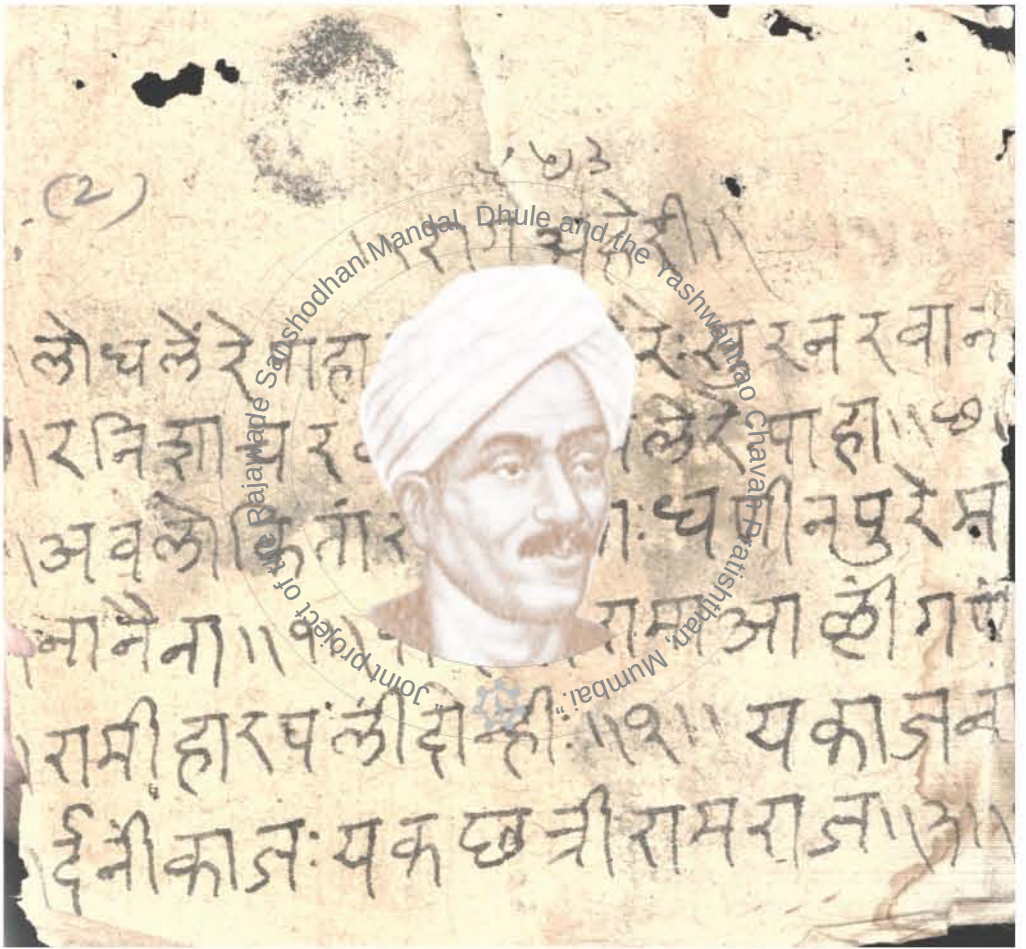
水

- १ एकनाथ
- २ कृष्णदासप्रभु
- ३ श्रीगुरुजीश्वर
- ४ दाससुत
- ५ शिवअनांत
- ६ नानकब्रज
- ७ पांडितकाव
- ८ गोविंदलज
- ९ निंवा
- १० रामानुज
- ✓ ११ रामदेव
- १२ भानुदास
- १३ गरीब परमानंद
- १४ लुकागाम
- १५ नरसिंहब्रज
- १६ मुनीश्वरती

90 शंकरराज 33 कवीश्वर जयसिंग
91 चांगा 34 आपरसुमदेवीवक्त
92 कृष्णदास 35 जयदेव मराठी भाषाजल 44
✓ 20 नागा विष्णुदास 36 कैशव
21 मानसेन ब्रज 37 सुरदास ब्रज
22 38 वाककृष्णस्वामी
23 39 मुरारि हरिदास
24 40 सरवत
25 रे 41 सावाजी भक्त
26 42 शाहीर कृष्णदास कृत पंच
27 43 हरीदास 44 रंगनाथ
28 45 शिवदास 46 ईश्वर
29 गोविंददास 47 जनपद
✓ 30 नामदेव 48 नित्यानंद 49 सौम्य
31 राघवस्वामी 50 साहू
32 आणंकी 51 जगन्निनंदन 52







(५) ॥ गाना धाना श्रीमान् ने श्रीत

सये आजि हरि हेरवी लेकु ज सहनी ॥

वाजकी म म्दम धूरवे पूव दनि ॥ सुटमि

रगनाभी चावि कसु देर बहुत रे ॥

नासा जतो सट छनि डलि ज डि त मणि

उळम करा कारहे पटिच चाचिले मि

भवती श्रवण गुंगळि ॥ १ ॥ निव्वन न्द मं

हि सुरनादनी सुरन दी समवरी दी

त सपुवृत्त वन माळ के हि चारिता गा

धिने रेवृत्ते साव के बम का कां द्विचे वाळुन

॥ १॥ उदित मग नि - ने रवि ते सा को सुद्वि

स नो वृत्त वरि व कनकत बुके के

धर निरकरत वीकी की ती

मर नासा ॥ त वन अंतरी

प क चमक की तप

टने दी स गोप गोप

॥ पीरवे न्ह सकी रे नैदवी धी ना

॥ चातां ये ई धे ई त मं द्द हांसतां ॥

॥ ४ ॥ ब्रह्मपद भुमी के वी त व नरी

॥ बोध कैः ॥ रुपरे चरित की पूर्ण रचना

॥ परमादधम रुपसाकार हे वणी ननि के

॥ शेष वचना ॥ १॥ वीवी ध अमरी वरी की जी

॥ रिस भवं हा सुस्वर दृष्टा परगा निगाणी

॥ इत सुत वीन वीतो हरि के वी वणी जे

॥ वणी तो सुटली वैदवाणी ॥ ८० ॥ ८१

॥ समयाद समाप्त ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

(5)

॥ श्री ॥ रागपाज्ञी ॥

॥ वैराग्यपीडा नीकवांठः विश्वंभरह रवीश्वरस्वरम्
॥ उ विश्ववित्तोत्तननीधु हुताशनः विश्वनिनयद्
॥ त विश्वदुरीतनवः विस्मीत सुरसुरविश्ववित्त
॥ रणा ॥ ५ ॥ शंकररिपु हत अंबर लघु दस्त तु
॥ वरः सतीत दी गजरः सुविक उंबर परीक
॥ टीत टीना गा वं दंबर तल नीय
॥ नीहरणा नीव र्वीगुपण दर्वः
॥ सुतीक्ष्णः कपु र्वती गशीरथः
॥ शुर्पनखा भुजः र्णः शुर्पण मम जी
॥ वरपर्पण धरणा मजी मुगु टअख उज्ज
॥ राजुटः मजी तचंज कीरण समकुं उल्लभ
॥ मुख गडः सुरसु भुज हउ उम र नर मुं उंग
॥ गजख उ नकरणा नील ॥ ४ ॥ पर्वत च
॥ राजा गज सर्वजनक मद गर्वणी हरत्रुः अपु
॥ र्व चरीतः जीवज नत कवीश्वरः सर्वणीत
॥ लक्ष्मी वपदी कर्वणि नरि रपा र्वती रमणा
॥ नील वणा ॥

॥ दी जे आपणः ऐं सै नेवें ब्रह्मज्ञानेः ३५
 (अनर्क वीदाज्ञानप्रसि ॥३॥) (उत्तमस-
 गो नीसांगेताः स्त्री स्याकने वीण मेकं
 ॥ वः ऐं ये स्त्री ये त्रताः प्राप्तामं
 ॥ फीतेपावे ॥४॥ (५॥ ५॥)

Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

-(७)

॥ श्री ॥ गणपतये नमः

॥ अदंगमगवरी अरधंगरी सीधी सीधी सुध
॥ रबीरपवाहन बिभरष ननांग ॥ और सक
॥ ल अघन हनैर ॥ १॥ बामदेव हत काम देडि
॥ मीडि मीडम रुकरनुत नाथ नाथ नाथ
॥ श्रीपु को दयो जो अ की वर ॥ २॥ नयो भस्म सु
॥ रनाम तब जब छल बल सब नी के हर
॥ बी डारो बौल कैलासु कसो बह ईह
॥ चुचु करत संकर फीरे ॥ ३॥ ६५ ॥ ६५ ॥

॥ अ दीन वानी ॥ ह्याणीः भुक्ती
॥ मुही नी असुर ॥ कीर्ति ॥ असुर की
॥ मदी नु सज्जन ॥ नीः कैलास नीवा
॥ रसीना ॥ १॥ असा नति ॥ च
॥ सीनी ॥ पाच प्रकारी नी ॥ १॥ ६५ ॥ ६५ ॥
॥ द्वाणीः भवानी राधायणीः ये वंगायंत यम
॥ कान्त संत सगीत मंदंग धनि नाम मठ
॥ ॥ ३॥ ६५ ॥ ६५ ॥ ६५ ॥

॥ राआडाना ॥

॥ बाकी चतवम चीतमनो हरली नवेम
॥ ये हांजीर ॥ ६॥ घरी घरि घरि पल घन
॥ दहन नुगसमानु जत भाय बावरी ज्यसज
॥ ल बीन वे मीन वे माये ॥ १॥ ६५ ॥ ६५ ॥

॥ श्रीगणपतये नमः श्रीगुरुभ्यो नमः

(४)

॥ श्री श्लोकप्रवृत्ताचार

॥ अंधकंतदनुमंदलोचनं मध्यलोचनम
॥ सुलोचनं ॥ रोहिणी रश्मि तपः चतुर्वि
॥ न्युनमंतगणये पुनः पुनः ॥ १॥ तीर्थग्राह
॥ कोमोरीगणेषो ह्रीन् गुहोरवी ॥ शिवो
॥ गीर्तनकोविदश्च कसमशिखरशिखरी
॥ श्री शी ॥ १२ ॥ ६१ ॥ ११ ॥ ७७ ॥ ८७ ॥
॥ अंधे चलनते गरी द्रुमं दे च दीनत्रयं मद्य
॥ लोचनमासमेकं सुलोचननदृश्यते ॥ १॥
॥ अश्वीनी नक्षत्रपात्रमेव वावेवागचो
॥ चा
॥ एषां श्रीहरहर
॥ कथासाक्षर
॥ द्यशो दासुत गुण कथनेनानुर
॥ शारसः ॥ एषां श्रीहरहरपादा
॥ बुज युगभजनेन प्रवृत्तं मनो
॥ मोधि मृतां धि मृतां धि गेतां
॥ निति वदति सदा कीर्तनस्थो
॥ मृदंगः ॥ १॥



सातर सारी साफेन सां सिर सा सा सा स
 ॥ सा अनाना सा ॥ पह सा रो ही स्वा मदी पा द पा
 ॥ मे पा गो प वे पा ॥ ज ग दी शा दो वा ह प्री के रा ॥
 ॥ ॐ कुर त स्मी त पं क न भ व नु तः री क र स न क स
 ॥ न व न वी दी तं ॥ ४ ॥ बा ब री पि प री ब द री सु व री
 ॥ सो व री ध म री भ्र म री भो क री कुर री दा वी गो
 ॥ नी का री मे ग री वा बा ब री घा रीः ल स्र वि र
 ॥ हे म ज्ज ति ना री दुः ख री ॥ ७ ॥ ही कु ह वि म ह
 ॥ कु र ह नी हा ह का पं डी त ज न म न नि ज सु
 ॥ ख स य का ॥ ५ ॥ ४ ॥ २ ॥

॥ हर हर हर सो स वे ना की ती सो सु मी ल स्था तु ने
 ॥ वे गु ण ना नाः ॥ श्र व णि ग ह्नी ० नां ता ऐ क वे नाः
 ॥ नि सि दी नी व द क रि सी नी तु न भी ढा हे भ व न
 ॥ व न नी जी त सु वी न सि धो री च नी ०
 ॥ नी धां गे नि र स नी ही तु जं ल
 ॥ सा या ॥ बु धा रि हे ई न कि र मि वा याः
 ॥ बो ले हरि प र ध नि ह व रि ॥ ज नि त रि
 ॥ पु नि कै रे गोर स र्वा ॥ ५ ॥ न क रि मि चो री ह
 ॥ ण उ नि अ णे वा हे म ज्ज ला इ तु के ह रि हे ई ध नि त
 ॥ दु स्ते पा यः चो रि क रि तां फा र तां ला भ का य च रि
 ॥ अ ॥ सो नि थां गे हि ना हि कि गो र स तु ज्ज ला र वा
 ॥ या अ श्रु त क रि ते से प थ ध त द धी दु ध न व नि
 ॥ त वि र ही त न क रि चो रि ॥ २ ॥ व द तां गो पा क्ता
 ॥ स क व्हां गो कु ल पा क्ता वि स्म क रि ती हां सं ती
 ॥ पु व ति र स बो लां भं डि त हा ण न क के न क के ह
 ॥ दि ची ली क्ताः वि धि हर सु र व र फ णि व र गो
 ॥ नि व र न र व र मु नि व र ने ण ति कि न्तर ॥ ३ ॥

(117)

119711

[illegible]

तेरा मेरुवावे साता चांगसावा

॥ स्वकीय दसादी दुगुणीत कीजेः त्रियो

॥ दुशी मेरुनी मेरुवीजे सपां के नो

॥ गोनी उरेत हस्यतुः शुभा शुभं

॥ आगम नंच व

॥ ये के अमनो

॥ अके उह हरे

॥ मार्गीः ॥ मार्गी

॥ जो चे अरे

॥ उके घरी सा चनेटेः न उरे च कहां

॥ मग नारा फीटेः न करो तीवती नक

॥ दापी ने टी ॥५॥

॥ वेदे गोपालं सततं भवा एवोद्य पंधी रं ॥ ६ ॥ कंसा ॥
 ॥ द्यसुरांतकं योगी जन्मान्नसहं सं ॥ ५ ॥
 ॥ कर धुत कमनिय कंजं लीला धुत नग
 ॥ राजं ॥ १ ॥ गोवी दाम जं नुत पंद कं म
 ॥ वसू देव नंद बा कं ॥ ३ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥

॥ पद ॥ ४ ॥

॥ देवकी नंदना निर्गुण सगुण विपु संघट
 ॥ रजा साव कं यमो वादि नो द्विषा तु मे
 ॥ नाम विश्व कं यमो वादि नो द्विषा तु मे
 ॥ वेम जं ॥ २ ॥ इति नामेः सस
 ॥ हो मुरा ति त विहरी मायष
 ॥ पा ॥ ३ ॥ इति विहरी मायष
 ॥ दनं दन सा चं तु शुष पं मा
 ॥ नाथा ॥ ४ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ६९ ॥ ७० ॥

॥ पद ॥

॥ पाहे नमी कै पाहे नमी कै पाहे न श्री धव्वीर
 ॥ कै पाहे न श्री धव्वीर ॥ ६९ ॥ मुर लीख मो
 ॥ ही त्त सर्व हि असु धर मुनी वर बंट
 ॥ धरा ॥ २ ॥ कुंज नी कुंज नी रसं चारी ना
 ॥ न व क्षय वारी ॥ ३ ॥ कै पाहे न श्री कं स
 ॥ ३ ॥ पां उ व या द व ज ती सुख कारी राम
 ॥ नु जा तारी ॥ कै पाहे न श्री कं स
 ॥ ४ ॥ ७० ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

(१५) इणे कूर्ज साडे सखन हेन २६।

॥ ब्रौयावस्त्रं चंदनं चारुस्थ
॥ वीणावाणी दृश्यते याचनारी
॥ नक्रांजंते सुधीपासातुरा
॥ प्रांसावीरं नोः स्तुता प्रसमु
॥ कानावा ॥ ७ ॥

॥ श्री ॥ मक्यानी लुखी नकु नयेप
॥ लवीद्यातु सुमनाचापरीमलुगुफा
॥ तानय ॥ १० ॥

॥ येसातथोन ॥

॥ पजाणे धाक ॥

॥ कणसाखरे ॥

॥ तियांचे पाणी मरनयेसी राजनी ॥ गगना

॥ सिगवसनिचा लुनये ॥ ३ ॥ डोलियांतील

॥ बाहुलि ॥ कुरुनये वेगळी ॥ सरिवलुणो

॥ निच्ये चलिधरुनये ॥ ४ ॥ ची बूलोरुकु

॥ माईच्या फांडणी ॥ कोण करी बुझा वणीत

॥ यावीहे लोवरणी ॥ ५ ॥ नदेवरुलतसे ॥

॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥

॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥

॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥

॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥

॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥

(15)

॥ श्री ॥

॥ साकरहि सपरिगो डीन दी से: नेकायतया
 ॥ वेगकि अस तासाज निभा देजनाई
 ॥ न: साशिपहावयासां डाओनिमान
 ॥ ॥ कापुराभीगीपरिमकु गाळा: तैसा
 ॥ तोउद्यडाके वि दिसे: ॥ १ ॥ पाठिपेटि
 ॥ नाहि सुवर्णा: येकाजनाई निंसाप
 ॥ जाणा ॥ ३ ॥ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥
 ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥

॥ नामा ॥

॥ जरिहें आकाशावर पडोसाहे: ब्रह्मगोकुलें
 ॥ गांजाये: वडोना न: पुनरपाये: ते
 ॥ तुझीच वसप बा: ॥ १ ॥ आणी
 ॥ कानकरिमा: म धरुके तुला
 ॥ आंरिपुला: ॥ ६ ॥ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥
 ॥ सुडोती: ते हे ना: ॥ १ ॥ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥
 ॥ पाचं माहापुतं क्यपावती: ते पु
 ॥ माझासार थीवी उवा ॥ १ ॥ भक्त तैसे
 ॥ जाऊ दुख पडो भारी: नाम न सुं डीन द
 ॥ के नी धारी ॥ पती वृताज वी प्रा
 ॥ खरी: भा तुदास ह्यणे देवें जो उनाह
 ॥ री: आणी रीवा न नारी पागीना ॥ ३ ॥ ६५ ॥



॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥
 देवाचे सोने कानगी २ ॥ सोने १ मासे ३ ॥ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥
 देव सरीवा ॥ १ ॥ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥
 देव कानगी उवाई १ ॥ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥
 ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥
 ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥

॥ नामाक्षराणि त्रिगुणाकृतानि त्रुनंग
 ॥ देशे त्रिधि मिश्रीतानिः स। द्यौ च भागं
 ॥ हनते च शेषं शप्ते च कन्या विशमे च पुनः ॥
 ॥ चैत्रमासैश्च रसे च गुण्यं चतुर्थं युक्तं
 ॥ तिथी वार मिश्रीतं अष्टौ च भा
 ॥ गं हनते च शेषं पुनः पराण्ये गतो
 ॥ दिशः पां ॥ १॥
 ॥ तीर्थ वार नक्षत्र ये कटोर कि
 ॥ जे जे न स चालि जे सातो
 ॥ सो भागलि उरु भागळ हो
 ॥ यमो उच सो बुध के न्यांग पा
 ॥ नग पाव न्यांग पाव न्यांग पा
 ॥ किन फरा कता बो ॥ १॥
 ॥ आ दिस मूर्हा वदने श। श। के। व
 ॥ क्षा व भा मो कटि चंद्र पुनः गुरु च
 ॥ ना भा भृग पृष्ठ देशे रानिः कन राहु
 ॥ पदे च केतु ॥ १॥ आदि सहानि र
 ॥ त्रिमर्थ लभं भा मे च मृत्यु बुध भु
 ॥ के सो रव्यं गुरो र्थ लभं शनि मर्थ ना
 ॥ शं राहु च केतु मृत्यु तच्चिह्न ॥ १॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com